अद़वाउल बयान

फी

तरजमतिल कुरआन

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०

azhar
PUBLICATIONS

नोटः इस तरजमे की इशाअत की तहरीरी इजाज़त इदारा अज़हर अकेड़मी लन्दन के क़ानूनी शौबे से ले कर आप भी तिजारत के लिए या लिवजहिल्लाह इशाअत कर सकते हैं।

नाम : अद़वाउल बयान फी तरजमतिल कुरआन

मुतरजिम : हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०

सफहात : 872

सिन् इशाअत : 1435 हि० - 2014 ई०

नाशिर : अज़हर अकेड़मी, लन्दन, बरतानिया

मिलने के पतेः

हिन्दुस्तानः

कुतुबखाना यहयवी, नज़्द मदरसा मज़ाहिर उलूम, सहारनपुर, यू०पी०
जामिअतुज़्ज़हरा, मुल्ला मोहल्ला, नानी नरोली, सूरत, गुजरात - 394110

पाकिस्तानः

दारूल इशाअत, उर्दू बाज़ार, एम. ए. जिन्नाह रोड, कराची - 1

जुनूबी अफ्रीक़ाः

Jamiatul Ulama South Africa
P. O. Box 42863, Fordsburg, 2033, Johannesburg

JUT Publishing
32 Dolly Rathebe Road, Fordsburg, 2033, Johannesburg
Tel: (+27) 11373 8000 | E: tasheel@islamsa.org.za

बरतानियाः

Azhar Academy Ltd.
54-68 Little Ilford Lane, Manor Park
London E12 5QA | UK
Tel: (+44) 208 911 9797 | Fax: (+44) 208 911 8999
E: sales@azharacademy.com | W: www.azharacademy.com

5

अर्ज़े नाशिर

- हमारे मुशफिक़ शेख और उस्ताज़े मुहतरम हज़रत अक़दस शैखुल हदीस मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत फुयूज़ुहुम दारूल उलूम, होलकम्ब, बरी, में दारूल उलूम के इब्तिदाई सालों से ले कर अब तक तरजमा कुरआन शरीफ पढ़ाते रहे। शुरू में कई साल तलबा अपनी तरजमा की कापियाँ लाहिक़ीन को मुन्तक़िल करते रहे। फिर कापियों की जगह कैसेट्स (ैंमजजमे), फिर सीडीज़ (ब्के) मुन्तक़िल होती रहीं। यहाँ तक के पन्द्रह बीस वरस से जब ये सीडीज़ वेब साईट पर रख दी गईं, तो दारूल उलूम के मुतअल्लिक़ीन के लिए मज़ीद आसानी हो गई थी।
- अब आखिरी मरहला तबाअत का रेह गया था। अगर्चे तलबा ने अपने तौर पर टाईप कर के, मालूम नहीं कुल्ली या जुज़्ई तौर पर, ये मरहला भी तै कर लिया था। लेकिन हमारी ख्वाहिश थी के बाक़ाइदा साहिबे तरजमा की इजाज़त से हम इस तरजमे को अज़हर अकेड़मी की तरफ से तबअ कराएं। मगर हमारी दरख्वास्त के बाद शुरू में तो इन्कार होता रहा। बाद में इस शर्त के साथ इजाज़त मिली के कोई माहिर इस तरजमे को बनज़्रे तस्हीह व इस्लाह मुकम्मल तौर पर देख ले।
- चुनांचे हम ने मुशफिक़ दोस्त जनाब खलील अशरफ साहब उस्मानी ज़ीद मजदुहुम के तवस्सुत से हज़रत मुफती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम से इस पर नज़रे सानी की दरखवास्त की, तो उन्हों ने अपने दारूल उलूम कराची के शौबए तखस्सुस फिद्दावत के डाइरेक्टर, हज़रत मौलाना डा० साजिदुर्रहमान साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के सुपुर्द ये काम फरमा दिया।
- डा० साजिदुर्रहमान साहब के वालिदे मुहतरम मुहद्दिसे कबीर शारिहे सुनने तिर्मिज़ी हज़रत मौलाना अश्फाकुर्रहमान साहब कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू हैं। चुनांचे आप ने चन्द माह में किबरे सिन्नी और इल्मी मशाग़िल और दारूल उलूम कराची की खिदमात के साथ तरजमे की इस्लाह व तस्हीह का काम मुकम्मल फरमा लिया। अल्लाह तबारक व तआला उन्हें बेहद जज़ाए खैर अता फरमाए और उन की खिदमाते जलीला को क़बूल फरमा कर उन के दरजात बुलन्द फरमाए। आमीन!
- अखीर में दुआ है के कलामे इलाही के इस तरजमे के सिलसिले में जो कोताही, कमी वाकेअ हुई हो, अल्लाह तआला उसे मुआफ फरमाए और अब तक जिन हज़रात ने उस में जांफिशानी की है या आइन्दा जो करेंगे, उन सब को अल्लाह तआला क़बूल फरमाए और सब के लिए उखरवी नजात का ज़रिया बनाए। आमीन!

इदारा अज़हर अकेड़मी, लन्दन

असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द की ताईदी तहरीर

5

क़ुरआने करीम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ से नाज़िलकरदा सब से आखिरी किताबे रुश्द व हिदायत है और तमाम उलूम व फुनून का सरचश्मा और बेहरे नापैदाकिनार है, जिस के हक़ाइक़ और निकात बयान करने के लिए क़ुरूने ऊला से ही उलमाए किराम ने अर्क़रेज़ी और जांफशानी की है और मुखतलिफ ज़बानों में तर्जमे व तफासीर लिखे हैं।

चुनांचे उर्दू ज़बान जो अपनी वुसअत व मक़बूलियत के ऐतेबार से दुन्या की चंद बड़ी ज़बानों में शुमार होती है, इस ज़बान में भी उलमाए किराम ने बड़ी अर्क़रेज़ी के साथ तर्जमे किए हैं, जिन में शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी नव्वरल्लाहु मरक़दहू, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रहिमहुल्लाह और हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी हफिज़हुल्लाह के तर्जमे बेहद मक़बूल हुए, और ये मुबारक सिलसिला ता हुनूज़ जारी है।

ये तर्जमाए क़ुरआने करीम जो आप के सामने है, हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब दा० ब० का है। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा हफिज़हुल्लाह, शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया मुहाजिर मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहु के मौतमिदे खास और अजल खुलफा में से हैं और हज़रत शैखुल हदीस रहिमहुल्लाह के ईमा पर दयारे यूरोप के मुल्के बरतानिया में दिने इस्लाम की इशाअत व तबलीग़ के लिए ख़ैमाज़न हो गए और वहां दारुल उलूम बरी के नाम से इदारा क़ाइम कर के आज तक शब व रोज़ दीन की खिदमत और तअलीम व तअल्लुम के लिए वक़्फ़ हैं, और इस वक़्त इंग्लैंड, कनाडा और अमरीका के मुख्तलिफ शेहरों में आप के इदारे के फ़ारिग़ुत्तहसील उलमाए किराम खिदमते दीन के लिए फैले हुए हैं, जो आप ही के मरहूने मिन्नत हैं।

ज़मानाए तदरीस में हज़रत वाला से क़ुरआने करीम का तर्जमा पढ़ने वाले तलबा तर्जमाए क़ुरआने करीम नोट करते रहे और कैसेटों और सी डी में तर्जमे के दर्स को महफूज़ करते रहे। इसी महफूज़ तर्जमे को हज़रत ने दक़ीक़ नज़रे सानी और ज़रूरी इस्लाह के बाद तय्यार किया है जो अल्हम्दुलिल्लाह क़ाबिले क़दर और लाइक़े तहसीन है।

हज़रत वाला ने अपने बिरादरे कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा दा० ब० के दस्तगिरिफ्ता हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब क़ासमी, बानी व मुहतमिम जामिआ

क़ासिमीया दारुल उलूम ज़करीया, ट्रांसपोर्ट नगर, मुरादाबाद, की मारिफ़त ये तर्जमा नज़रे सानी के लिए हम असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द के पास इरसाल फरमाया, जिस को हम लोगों ने तक़रीबन चार माह की मुद्दत में बड़ी गेहराई और गीराई और ख़ुलूस व महब्बत के साथ देखा, पढ़ा और जहाँ ज़रूरत महसूस हुई मशवरे दिए, जिस से ये तर्जमा मुस्तनद, क़ाबिले ऐतेमाद, नाफिअ और मुफीद हो गया है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहब मोतारा हफिज़हुल्लाह का ये तर्जमाए क़ुरआन उम्दा किताबत और आला तबाअत से आरास्ता हो कर क़ारिईन के हाथों में है। दुआ है के रब्बे रहीम व करीम मौलाना मोतारा साहब को शायाने शान जज़ाए खैर अता फरमाए और हम सब के लिए ज़ख़ीरए आख़िरत बनाए। आमीन।

मौलाना मुहम्मद नसीम अहमद साहब बाराबंकवी, मौलाना मुहम्मद अय्यूब साहब मुज़फ़्फ़रनगरी, मौलाना मुनीर अहमद साहब, मौलाना मुफ़्ती राशिद साहब, मौलाना मुफ़्ती अब्दुल्लाह साहब मारूफी, मौलाना खिज़र अहमद साहब, मौलाना मुहम्मद अफज़ल साहब, मौलाना मुहम्मद साजिद साहब व मौलाना मुहम्मद आरिफ जमील साहब

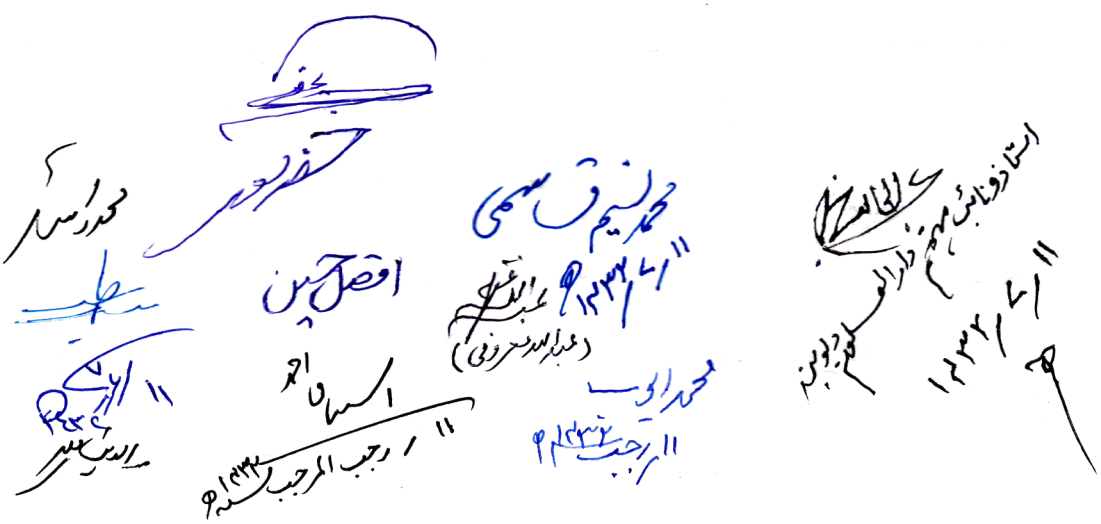

हज़रत मौलाना मुख्तार असअद साहब की राए गिरामी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ○

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم۔ امابعد۔۔

दर्स व तदरीस या किसी वाक़िआती इल्मी शाहकार की बड़ी खूबी ये होती है के वो किसी तअब और उल्झन के बग़ैर समझ में आ जाए, सामिईन व नाज़िरीन के क़ुलूब को अपनी तरफ खींचे और अगर उस को तवज्जुह से सुना जाए तो ज़हननशीन होने में भी देर न लगे।

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत बरकातुहुम का ये तर्जमा मज़कूरा तमाम खुबियों का मजमूआ हैः आसान भी है, जाज़िबे क़ुलूब भी है, और तवज्जुह के साथ पढ़ा जाए तो जल्द ज़हननशीन भी हो जाता है। मज़ीद बरआँ अक़रब इला अल्फाज़िल क़ुरआन भी है, जिस से कलामुल्लाह शरीफ का मफहूम व मक़सूद उजागर होने के साथ ये वज़ाहत भी हो जाती है के अल्फाज़ के अस्ल और लुग़वी मआनी क्या हैं।

खुलासा ये के ये बाबरकत तर्जमा एक इन्तिहाई मुफीद इल्मी काविश और उलूमे क़ुरआनी पर हज़रत मौलाना मद्दज़िल्लुहुल आली की नज़रे अमीक़ और महारते ताम्मा का अक्से जमील है।

हिन्द व पाक के मुतअद्दद उलमाए किराम ने नज़रे सानी के बाद उस की तसवीब व तहसीन फरमाई है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का करम है के राक़िम को भी इस पर नज़रे सानी की सआदत हासिल हुई और इस ज़ैल में जो कुछ बन्दे ने लिखा, साहिबे तर्जमा ज़ीद मजदुहुम ने शरफे क़बूल से नवाज़ा और दुआएं दीं। फलिल्लाहिल हम्द।

अल्लाह तआला तिश्नगाने उलूम को ज़्यादा से ज़्यादा इस चश्मए शीरीं से सैराब करे, अवाम व खवास के लिए इस को नाफेअ बनाए और दारैन में क़बूलियते आम्मा व ताम्मा अता फरमाए। ईं दुआ अज़ मन व अज़ जुम्ला जहाँ आमीन बाद।

(हज़रत मौलाना) मुख्तार असअद सहारनपूरी (उफिय अन्हु)
19 मार्च 2012 ई०
अज़हर अकेड़मी, लन्दन

مختار اسعد سہارنپوری

आह! हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा

रहमतुल्लाहि अलैह

दरअस्ल ये तर्जमा "अदवाउल बयान" क़ारिईन के हाथों में न पहोंच पाता, अगर मौलाना अब्दुर रहीम साहब रहमतुल्लाहि अलैह की दुआएं और तवज्जुहात और उन की तहरीज़ व तशजीअ उन के बिरादरे खुर्द हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा पर न होतीं, बल्के ये केहना ज़्यादा मुनासिब है के हज़रत मरहूम के पैहम इसरार और वाज़ेह हुक्म के बाद ही ये तर्जमा पेहली मर्तबा मन्ज़रे आम पर आया था, इस लिए मुनासिब मालूम होता है के हज़रत मौलाना मरहूम के मुख़्तसर हालात और उन की ख़ुसूसियात यहां शामिले इशाअत कर दी जाएं। अल्लाह तआला मरहूम को जज़ाए खैर दे और ये तर्जमा उन के हसनात में इज़ाफ़े का सबब हो।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा अल्लाह के एक बातौफ़ीक़ बन्दे, खामोश तबीअत दाअी, सरज़मीने कुफ्रिस्तान पर एक शमए फ़रोज़ाँ, मीनाराए नूर, मम्बए इल्मे दीन और नाशिरे रुश्द व हिदायत थे। उन्हों ने बचपन ही से तालीम व तर्बियत की तरफ तवज्जुह दी, और ज़ाहिरी उलूम की तकमील के बाद बातिनी उलूम की तहक़ीक़ व तहसील के लिए वक़्त की मशहूर शख्सीयत क़ुत्बे आलम शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैह की खिदमते बाबरकत में हाज़िरी दी, जिन से पेहले इल्मे हदीस की दौलत हासिल की, जो गोया के बातिनी उलूम की तहसील और तकमील के लिए तमहीद थी। इस तरह हज़रत शैख़ के यहाँ एक आम शागिर्द से ख़ास शागिर्द और एक आम कातिब से ख़ास कातिब और खादिमे खास का मक़ाम हासिल कर लिया। फिर सुलूक व तरीक़त का रास्ता भी बहुस्न व खूबी तय कर लिया, यहाँ तक को हज़रत शैख़ को आप से राहत महसूस होने लगी, जिस का इज़हार हज़रत शैख़ ने इस तरह फरमाया के: "अब्दुर रहीम! तुझ से रूहानी राहत मिलती है।"

फिर इरशाद फरमाया के ज़ाम्बिया के लक़ व दक़ वीराने में जा कर दीन की शमअ रौशन करो और दीने मुबीन की दअवत दो और तालीम व तरबियत का इन्तिज़ाम करो, और जहालत व तारीकी के मुल्क में इल्म की रौशनी के दीप जलाओ। चुनांचे हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने ज़ाम्बिया के एक ग़ैर तरक़्क़ीयाफ्ता दूरउफ्तादा इलाक़ा चीपाटा में पहोंच कर एक दीनी इदारे की बुन्याद रख दी, और मअहदुर रशीद अलइस्लामी उस का नाम रखा। इस तरह हज़रत शैख़ ने

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब को अफ़्रीक़ा की सरज़मीने ज़ाम्बिया के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया, और आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ साहब को बरतानिया की सरज़मीन पर इल्म की शमअ रौशन करने के लिए मुक़र्रर फरमाया। और दोनों को एक ख़ास रक़म भी इनायत फरमाई, और दोनों के इदारों को अपने क़ुदूमे मयमनत से भी मुशर्रफ फरमाया।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी इल्मी क़ाबिलीयत व सलाहियत के बावजूद हज़रत शैख़ के हुक्म पर ऐसे बयाबान जंगल में जाने को पसन्द किया, और अपनी आला इल्मी सलाहियत को वहां के झाड़ झंकार को साफ़ करने में ख़त्म कर दिया, और ऐसा शजरए तय्यिबा लगाया के أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآء का मन्ज़र महसूस होने लगा। मौलाना ने जिस दौर में वहाँ जा कर काम शुरूअ किया, वो इन्तिहाई पुरखार था, बल्के एक चटयल मैदान था, जहां पर हर तरफ सियाही, तारीकी और जहालत के बादल मंडला रहे थे, और पढ़े लिखे आदमी का जी लगना बहोत दुश्वार था, मगर उस हिम्मत के जियाले ने ये सब अल्लाह की ख़ुशनूदी और अपने शैख़ के हुक्म की तामील में बर्दाश्त किया, और अखीर ज़िन्दगी तक शैख़ के हुक्म को निभा दिया, और वहीं की ख़ाक में आसूदा हो गए। इस तरह बफ़ज़्ले खुदा वहां जो तालीमी काम शुरूअ किया था, उस का फैज़ अफ़्रीक़ा के बहोत से मुल्कों, ख़ास तौर से ज़ाम्बिया और उस के आस पास के मुल्कों में खूब फैला हुवा है। मौलाना ने सियाहफाम नस्ल के तलबा को जहां दीन और इल्मे दीन सिखाया, क़ुरआने करीम और दीनियात की तालीम दी, वहीं उन को उर्दू ज़बान भी सिखाई, जो इस वक़्त बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक ही की नहीं, बल्के दुन्या में अरबी, अंग्रेज़ी के साथ ज़्यादा बोली जाने वाली ज़बान है, और अरबी के बाद जिस में दीन का सब से ज़्यादा सरमाया मौजूद है।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब की पैदाइश यकुम जुमादस्सानिया सन १३६३ हिजरी, मुताबिक़ २४ मई सन १९४४ बरोज़े बुध मौज़अ वरेठी में हुई। आप के आबाई वतन और खानदान और इब्तिदाई हालात से मुतअल्लिक़ आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा साहब तहरीर फरमाते हैं के: हमारा खानदान वरेठी ज़िला सूरत में सदियों से मुक़ीम है, और ज़िराअत पेशा है। मगर हमारे दादा मुहतरम और वालिद साहब ने ज़मीन बटाई पर दे कर तिजारत का पेशा इख़तियार किया। और दादा मरहूम ने जुनूबी अफ़्रीक़ा का सफर किया, कई साल वहां मुक़ीम रहे और अरसाए दराज़ के बाद वतन वापस लौटे और चन्द रोज़ बाद ही वरेठी में इन्तिकाल फ़रमाया। दादा साहब ने इकलौते बेटे को औलाद में पीछे छोड़ा। वालिद साहब ने अपनी वालिदा की आग़ोशे तरबियत में यतीमी की हालत में परवरिश पाई, और जवानी को पहोंच कर तिजारत शुरूअ कर दी। और हथुरण के एक मुख्य्यर खानदान में पेहला निकाह हुवा और

अल्लाह ने एक लड़का अता फरमाया, नाम मुहम्मद अली तजवीज़ फरमाया। और पेहली एहलिया का चन्द साल ही में इन्तिक़ाल हो गया, तब दूसरा निकाह हमारी वालिदा आमिना बिन्ते मुहम्मद बिन इस्माईल देसाई से हुवा। हमारे नाना के आबा व अजदाद दरयाए ताप्ती के किनारे पर खुलवड़ नामी क़स्बे में आबाद थे। वहाँ इस खानदान की ज़मीन पर बनाई हुवी किनारे वाली मस्जिद अब तक मौजूद है। किसी वजह से ये खानदान नानी नरोली मुन्तक़िल हो गया, जो उस ज़माने में तक़रीबन जंगल ही था। यहां ज़िराअत का पेशा इख़्तियार किया और दीनी ऐतेबार से न सिर्फ गाउँ में, बल्के अतराफ़ में ये खानदान बिलखुसूस हमारे नाना जान दीनी हल्क़े में मशहूर थे। इस लिए आप ही का दौलतकदा यहां आने वाले उलमा व मशाइख के लिए मेहमानखाना होता था।

वालिदा मुहतरमा से निकाह के बाद वालिदा की दीनदारी का असर वालिद साहब पर भी आहिस्ता आहिस्ता पड़ना शुरूअ हुवा, यहाँ तक के वालिद साहब मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर बंगाली मुहाजिरे मक्की (जो हज़रत अल्लामा मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैह के खलीफा मुजाज़ थे) से बैअत हो गए और ज़िक्र व शग़ल शुरूअ कर दिया। इधर निकाह के बाद पांच छे साल तक कोई औलाद नहीं हुई। इसी अस्ना में हज़रत मूसा सुहाग के सिलसिले के एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए। वालिद साहब ने औलाद के लिए दुआ की दरख्वास्त की। आप ने वालिदा के लिए अंगूठी दे कर एक लड़के की बशारत दी और होने वाले लड़के के लिए इल्म व सलाह वग़ैरा औसाफ से मुत्तसिफ़ होने की बशारत दी। साल भर के बाद वो बुज़ुर्ग दोबारा तशरीफ़ लाए, तो उस से पेहले मौलाना अब्दुर रहीम साहब का तवल्लुद हो चुका था। उन्हें देख कर मसरूर हुए, दुआएं दीं और दूसरी अंगूठी दे कर एक दुसरे लड़के की इसी तरह बशारत दी।

वालिद साहब ने जब से ज़िक्र व शग़ल शुरूअ किया था, आहिस्ता आहिस्ता उन की तबीअत पर ज़िक्र का असर बढ़ता चला गया। यहां तक के वालिद साहब पर जज़्बी कैफियत का ग़लबा होने लगा। और उसी कैफियत में वालिदा साहिबा से फरमाते के: "मैं ने तर्के दुन्या का इरादा कर लिया है, आप अपने घर चली जाओ!" खानदान के बड़ों ने हर तरह समझाने की कोशिश की, बिलआख़िर उन्हों ने तलाक़ नामे पर दस्तखत करवा लिए के कहीं ये हालत जुनून में तब्दील हो गई तो बीवी उमर भर के लिए मुअल्लक़ रेह जाएगी। और तलाक़ की इद्दत वज़ऐ हमल थी। चुनांचे तलाक़ के चन्द रोज़ बाद ही नन्हियाल नानी नरोली में हमारे नाना के यहां मेरी यकुम मुहर्रमुल हराम सन १३६६ हिजरी पीर की शब में विलादत हुई। जब उमर तक़रीबन आठ साल हुई, तो जुनूबी अफ़्रीक़ा में हमारी खाला ग्यारा बच्चों को छोड़ कर हालते ज़चगी में इन्तिक़ाल कर गईं। उन की जगह खालू ने वालिदा से निकाह किया और वालिदा अफ़्रीक़ा चली गईं। और

नाना नानी ने (भाई साहब की और) मेरी परवरिश की। चन्द साल बाद उन दोनों का साया भी सर से उठ गया। उन के बाद ख़ाला ने परवरिश की और परवरिश का हक़ अदा कर दिया।

हर बुज़ुर्ग की अलग अलग सिफ़ात होती हैं, मगर हज़रत मौलाना की बहोत सी सिफात में से एक सिफत ये थी के वो एहले तअल्लुक़ का बहोत लिहाज़ करते थे और जो एहले मदारिस वहां पहोंचते थे उन को हक़ीर नहीं समझते थे। नहीं तो आज कल, बाज़ एहले इल्म और मशाइख ही नहीं, बल्के बाज़ मर्तबा तो बाज़ एहले मदारिस भी जब उन को मालूम हो जाए के आने वाला चन्दे वाला है या मदरसा वाला है, तो उस को हक़ीर समझते हैं, और हक़ीर न भी समझें मगर ज़्यादा खातिर में नहीं लाते, उस की तरफ तवज्जुह और उस का तआवुन करना तो दूर की बात है। इस सिफत में मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी नव्वरल्लाहु मरक़दहु बहोत मुमताज़ थे। वो हर आने वाले की क़दर करते थे, ख़ास तौर से दीनी कामों की निस्बत पर जो भी आते थे। इसी तरह हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा भी इस सिलसिले में मुमताज़ थे, जो एहले मदारिस हा ख़ास ख़याल फरमाते थे और उन का हर मुमकिन तआवुन करते थे। हैरत होती है के वो शैख़ होने के बावजूद लेने वाले हज़रत ही नहीं, देने वाले हज़रत थे। वो हिन्दुस्तान में बाज़ मशाइख को खुसूसी रक़में भेजते थे। एक सिफत हज़रत मौलाना में ये थी के वो मुस्तग़नी थे, गोया के उन को लोगों से मिल कर वहशत होती थी। वो अपने मामूलात के पाबन्द थे, मामूलात में ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं आता था। नवाफिल और तिलावते क़ुरआने करीम में अक्सर मशग़ूल रेहते थे।

बात साफ़ करते थे, और साफ़ सीधी बात ही को पसन्द करते थे। किसी सवाल के जवाब में बात के तकरार और हेराफेरी को नापसन्द फरमाते थे और उस पर फ़ौरन नकीर करते थे। उन्हों ने अपने मअहद को चलाने में एक चीज़ का ख़ास तौर से एहतेमाम किया है के अपने मदरसे में ज़कात की मद उन्हों ने नहीं ली, सिर्फ लिल्लाह अतिय्ये की मद में उन्हों ने अपने इदारे की तामीरात भी कीं, और सालाना खर्च जो अच्छा खासा है, वो हमेशा लिल्लाह से चलाया है। वरना आज कल तो तुज्जार का भी ज़्यादातर मिज़ाज ज़कात देने का है, मगर हज़रत की करामत ही कहिए के ऐसे आज़माइश के पुराशोब दौर में उन्हों ने अपने मअहद को लिल्लाह के ज़रिए से चलाया। क़ुरआने करीम की ये आयत وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ، وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ऐसे ही लोगों के लिए है।

बहर हाल, हज़रत की किन किन सिफ़ात को बयान किया जाए?वो तो अल्लाह के एक

वली और अल्लाह की निशानियों में से एक थे और गोया के सरज़मीने अफ़्रीक़ा के लिए चाहे उन को इमाम कहा जाए या मुस्लिह कहा जाए या मुजद्दिद कहा जाए, हर एक लक़ब उन के लिए मौज़ून है। वो बेज़रर और मुख्लिस इन्सान थे। अल्लाह तआला ने उन को हज़रत शैख़ की दुआ की बरकत से हज और उमरे की भी बार बार तौफ़ीक़ दी और उन्हों ने भी इस नेअमते उज़्मा से खूब फाइदा उठाया। अल्लाह तआला उन को ग़रीक़े रहमत करे।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी पूरी ज़िन्दगी अफ़्रीक़ा की सरज़मीन पर दिनी तालीम की नशर व इशाअत में तमाम कर दी और जब आख़िरत के सफर का वक़्त आया तो बाक़ियाते सालिहात छोड़ कर चले गए। हदीस में आता है के जब इन्सान मर जाता है तो तीन चीज़ों का सवाब उस के लिए जारी रेहता है। एक तो सदकए जारिया मसलन कोई रिफाही काम अन्जाम दिया या कोई मस्जिद व मकतब और मदरसा बना दिया या आम पब्लिक के फाइदे की खातिर कोई काम किया, या कोई इल्मी कुतुबखाना क़ाइम किया, या इल्मी किताबें और तसनीफ़ात छोड़ी हों और शागिर्दों का एक सिलसिला हो, इसी तरह नेक सालिह औलाद छोड़ी हो जो सआदतमन्द हो और वालिदैन के लिए दुआ करती हो। माशाअल्लाह, अल्लाह तआला ने हज़रत मौलाना को तीनों निअमतों में से वाफिर हिस्सा अता फ़रमाया के "सिराजुल क़ारी", "महब्बतनामे", और "हक़ीक़ते शुक्र" वग़ैरा किताबें और हज़ारों शागिर्द छोड़े, एक दिनी तालीमी इदारा छोड़ा, और फिर उस के तहत कितने ही मकातिब छोड़े और नेक सालिह औलाद छोड़ी।

अब हज़रत मौलाना की ज़िन्दगी की शाम हो चुकी थी, इस लिए वो अपने आमाल व खिदमात की उजरत के लिए लिक़ाए रब के मुन्तज़िर थे, जो बग़ैर मौत के मुमकिन नहीं। इस लिए हज़रत मौलाना ने भी यही राह इख़्तियार की और २५ मुहर्रमुल हराम सन १४३४ हिजरी मुताबिक़ ९ दिसंबर २०१२ की सुब्ह की नमाज़ के बाद तमाम मामूलात से फ़ारिग़ हो कर अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो गए। इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन। और शाम को साढ़े तीन बजे नमाज़े जनाज़ा हुई और चीपाटा के आम क़ब्रस्तान में हमेशा हमेश के लिए आसूदाए ख़ाक हो गए।

غفر الله له ورفع درجاته في جنات النعيم

इदारा अज़हर अकैडमी, लन्दन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जमा कुरआन हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दाम ज़िल्लुहुम

(साहिबे मुक़द्दमा हाज़ा, हज़रत मौलाना साजिदुर्रहमान साहब सिद्दीक़ी, 4 सफर 1433 हि०, मुताबिक़ 30 दिसम्बर 2011 ई०, बरोज़ जुमा इस दारे फानी से रिहलत फरमा गए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रफीअ उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम ने पढ़ाई। अल्लाह तबारक व तआला मौलाना मरहूम को अपने जिवारे रेहमत में बुलन्द दरजात से नवाज़े। आमीन!)

الحمد للہ نحمدہ ونستعینہ ونستغفرہ ونؤمن بہٖ ونتوکل علیہ ونعوذ باللہ من شرور انفسنا ومن سیئات اعمالنا من یھدہ اللہ فلا مضل لہ ومن یضللہ فلا ھادی لہ ونشھد ان لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ ونشھد ان سیدنا ومولانا محمداً عبدہ ورسولہ وصلی اللہ علیہ وعلی آلہٖ وصحبہ وسلم۔

सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत शैखुल इस्लाम मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मुद्द ज़िल्लुहुम ने अज राहे कमाले इनायत इरशाद फरमाया के अहक़र हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम (मुहतमिम दारूल उलूम बरी, इंगलैंड) के तर्जमए कुरआने करीम का मुतालआ करे और उस के बारे में अपनी मुतवाज़िआना राए से मौसूफ को मुत्तलेअ कर दे। अहक़र ने हज़रत शैख के ईमा को हुक्म तसव्वुर करते हुए हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम के तर्जमए कुरआन को लफज़न लफज़न पढ़ा और जुस्ता जुस्ता अपनी मुतवाज़िआना राए भी तहरीर की। जिस को हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने अपने अल्ताफे करीमाना से शरफे क़बूल भी अता फरमाया। फलिल्लाहिल हम्दु वलहुश्शुक्र।

इस अहक़र को अपनी कमइल्मी की बिना पर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की गिरांक़द्र शख्सीयत और उन के हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से तअल्लुक़ के बारे में आगाही हासिल न थी। हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम ने इस आजिज़ को ज़रूरी कवाइफ से मुत्तलेअ फरमाया। अगर्चे मैं हरगिज़ इस क़ाबिल न था के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की शख्सीयत और उन के तर्जमए कुरआन के बारे में कोई तहरीर सुपुर्दे क़लम करता, मगर बक़ौले शाइरः

हिकायत अज़ क़दे आँ यार दिलनवाज़ कुनैम
बईं बहाना मगर उम्रे खुद दराज़ कुनैम

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू कमालाते बातिनी और मदारिजे इल्मी की उन बुलन्दियों तक पहोंचे हुए थे के बिला तअम्मुल उन की शख्सीयत को सलफे सालेह की सीरत व किरदार और उन के इल्म व अमल का एक जामेअ तरीन पैकर क़रार दिया जा सकता है। हज़रत शैखुल हदीस का तअल्लुक़ कांधला के उस अज़ीम खानवादे से था जिस का सिलसिलए नसब हज़रत मुफ्ती इलाहीबख्श साहब रहमतुल्लाहि अलैहि और फिर ऊपर हज़रत अबू

बक्र सिद्दीक़ रदि़यल्लाहु अन्हु तक पहोंचता है।

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू 11 रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० में पैदा हुए। आप के वालिद का नाम हज़रत मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और आप के जद्दे अमजद का इस्मे गिरामी हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि है। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने इल्मे हदीस अव्वलन अपने वालिद मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और उन के बाद अपने मुरब्बी व मुरशिद हज़रत मौलाना खलील अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि से हासिल किया और 'बज़लुल मजहूद' की तालीफ में अपने शेख की मुआवनत फरमाई। हदीस और उलूमे हदीस का अस्ल ज़ौक़, मौजूअ और मेहनत व तहक़ीक़ का मैदान था और उस को वो तक़र्रूब इलल्लाह और तक़र्रूब इलर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब से बड़ा ज़रिया समझते थे और उस को उन्हों ने अपना शिआर व दिसार बना लिया था। यहांतक के शैखुल हदीस उन के नाम के क़ाइम मक़ाम और उस से ज़्यादा मशहूर हो गया था।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम हज़रत शैखुल हदीस के तिलमीज़े खास, उन के मुजाज़े बैअत और उन के मुक़र्रबीने खास में से हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोताा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुमुल आली मुहतमिम दारूल उलूम बरी इंगलैंड मुहर्रमुल हराम 1366 हि० (25 नवम्बर 1946 ई०) को एक दीनी घराने में पैदा हुए। इब्तिदाई तालीम मदरसा तरग़ीबुल कुरआन नानी नरोली में हासिल कर के सन् 1961 ई० में रांदेर के मशहूर मदरसा जामिआ हुसैनिया में दाखला लिया और हिदाया अव्वलैन तक यहीं तालीम हासिल की। उस के बाद मज़ाहिर उलूम (सहारनपूर) में दाखला लिया और शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब से मिश्कात पढ़ी और जलालैन मौलाना मुहम्मद आक़िल साहब से और हिदाया सालिस मौलाना मुफ्ती मुहम्मद यहया साहब से पढ़ी। उस के बाद नसई और अबू दाऊद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब जौनपुरी से, तिरमिज़ी और सहीह मुस्लिम हज़रत मौलाना मुफ्ती मुज़फ्फर हुसैन साहब से और तहावी हज़रत मौलाना असअदुल्लाह साहब से पढ़ी और सहीह बुखारी शरीफ (मुकम्मल) हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से पढ़ी।

दौराने तालीम ही इस्लाह की फिक्र दामनगीर हुई और हज़रत मौलाना अहमद अदा गोधरवी के मश्वरे से हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बैअत के लिए उन की खिदमत में अरीज़ा इरसाल किया जिस को हज़रत शैखुल हदीस ने शरफे क़बूलियत बख्शा और दाखिले सिलसिला फरमा लिया।

तअल्लुक़े इरादत क़ाइम होने के बाद तालीम के साथ मामूलात का सिलसिला भी जारी रहा। हज़रत शैख से पेहली मुलाक़ात उस वक़्त हुई जब हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैहि (अमीर तबलीग़ी जमाअत) सफरे हज के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। और देहली से बम्बई आने वाले थे। सूरत के शाइक़ीने मुलाक़ात हज़ारों की तादाद में रेलवे स्टेशन पर जमा हो गए थे जिन में जामिआ हुसैनिया, मदरसा अशरफीया (रांदेर) और मदरसा

जामिआ इस्लामिया (डाभेल) के तलबा व असातिजा के अलावा हज़ारों अवाम सरापा इशतियाक़े ज़ियारत बन कर शुरूअ रात से ही वहाँ पहोंच गए थे। सुब्ह चार बजे ट्रेन स्टेशन पर पहोंची। ट्रेन के ठेहेरने का वक़्त सिर्फ तीन मिनट था। मगर ट्रेन पंद्रह मिनट ठेहरी रही। और मुशताक़ाने ज़ियारत ने हज़रत का दीदार किया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैहि ने ट्रेन के दरवाज़े में खड़े हो कर हाज़िरीन से खिताब फरमाया, जो ट्रेन की रवानगी तक जारी रहा।

१३८४ हि० में हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में अपने बिरादरे मुहतरम मौलाना अब्दुर्रहीम साहब की मईयत में हाज़िरी हुई। मौलाना अब्दुर्रहीम साहब दौराए हदीस से फराग़त के बाद हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में मुस्तक़िल क़ियाम का इरादा रखते थे। बिरादरे मुहतरम के हमराह सहारनपूर पहोंच गए। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि की खिदमत में हाज़िरी का शर्फ हासिल हुवा।

"कच्चे घर में क़दम रखते ही चौखट से आगे क़दम बढ़ाना मुशकिल हो गया। नज़रें चुरा कर देखा तो निगाहें चका चौंध हो गईं। आफताब की तरह पुरजलाल चेहरा जिस में निगाहों को खैरा करने वाली बर्क़बार आँखें, सर खुला हुवा, आस्तीनें चढ़ी हुईं, चहारज़ानू जल्वाअफरोज़ हैं।"

उसी साल हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने पूरे माह के ऐतेकाफ का सिलसिला मदरसा क़दीम की दफ्तर वाली मस्जिद से शुरू किया। मस्जिद मौतकिफीन से भर गई।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने सहारनपूर के अपने क़ियाम के दौरान अपने तालीमी मराहिल भी मुकम्मल किए और हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से रूहानी फुयूज़ भी हासिल करते रहे।

दौराए हदीस से फराग़त के बाद वालिदा ने इंगलिस्तान में मुक़ीम रिश्तेदारों में निकाह तै कर दिया और हज़रत शैखुल हदीस ने हुक्म फरमाया के "जाओ सूरत जा कर वालिदैन की खिदमत करो।" चंद माह बाद वालिदे मुहतरम का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम इंगलिस्तान तशरीफ ले गए।

१३८६ हि० में हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू रमज़ानुल मुबारक में हरमैन तशरीफ लाए और पन्द्रह रोज़ मक्का मुकर्रमा में क़ियाम फरमाया और आखिरी अशरे में ऐतेकाफ फरमाया। दौराने ऐतेकाफ एक शब तरावीह वग़ैरा से फराग़त के बाद हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम को याद फरमाया और आप को बैअत की इजाज़त मरहमत फरमाई। और अपने दस्ते मुबारक से मिशलह पेहनाया।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम का हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बहोत गेहरा और मरबूत तअल्लुक़ रहा और ये तअल्लुक़ हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू की हयात के आखिरी लमहात तक जारी रहा। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि के ईमा पर आप ने इंगलिस्तान में दारूल उलूम क़ाइम किया और दीनी तालीम व तरबियत का एहतेमाम फरमाया। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने तहरीर फरमाया के

''इन्शाअल्लाह तुम्हारे मदरसे की ज़रूरियात अल्लाह की ज़ात से क़वी उम्मीद है के जल्द पूरी हो जाएंगी।''

दारूल उलूम के मुतअल्लिक़ एक दूसरे गिरामीनामे में ये भी तहरीर फरमाया के–

''क़ारी यूसुफ! तुम्हारे मदरसे का फिक्र मुझे भी इन्शाअल्लाह तुम से कम न होगा। दिल से दुआएं भी कर रहा हूँ।''

''मगर मेरे प्यारे! इन मशाग़िले आलिया में लग कर हमारी लाईन को खैरबाद न केह देना। दीनी कामों में कुव्वत रूहानियत से होती है। मामूलात की पाबन्दी और कम से कम आधा घंटा यकसूई का रखना ज़रूरी है।''

''मगर यूसुफ प्यारे!

है यही शर्ते वफादारी के बे चूनो चिरा
वो मुझे चाहे न चाहे मैं उसे चाहा करूँ

मुझे तो तुम्हारे दारूल उलूम ने ऐसा पागल बना रखा है के हर वक़्त उसी का खयाल, और सोच व बिचार उसी का रेहता है। तुम तो माशाअल्लाह

متى ما تلق من تهوى، دع الدنيا وأهملها

के मरतबे पर फाईज़ हो और तुम्हारे खुद्दाम तुम से भी बीस गज़ आगे। ये तो पयारे! जो अपने बड़ों के साथ जैसा सुलूक करता है छोटे उस के साथ यही करते हैं। मुन्तज़िर रहो।''

आम तौर पर मुसलमानों का इल्मी और दीनी इन्हितात अब इस दरजा गेहरा और मुहीत हो चुका है के आम्मतुल मुस्लिमीन बुज़ुर्गों की उर्दू तहरीरों के पढ़ने और उन के कमा हक़्क़हू समझने पर भी क़ादिर नहीं रहे। ये अम्र एक नागुज़ीर ज़रूरत बन कर सामने आ गया है के इल्मे दीन की इशाअत व तबलीग़ के लिए उर्दू ज़बान के सहल और रवां उसलूबे निगारिश को तरजीह दी जाए और इल्मी दक़ाइक़ के बजाए अस्ल हक़ीक़त से रूशनास कराने की फिक्र की जाए। खुद ये कुरआने करीम के उर्दू के तराजिम अब आम मुसलमानों के लिए क़ाबिले फहम नहीं रहे इस लिए ये एक नागुज़ीर तक़ाज़ा था के मौजूदा ज़रूरतों के पेशे नज़र कुरआने करीम का सलीस और रवां क़ाबिले फहम उर्दू में तर्जमा किया जाए। 'अलहम्दुलिल्लहि वलमिन्नह' के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम ने इस ज़रूरत को बहोत अहसन तरीक़े से मुकम्मल फरमा दिया।

ये अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम और उस का एहसाने अज़ीम है के ज़ेरे नज़र तर्जमए कुरआन मुतअद्दद खूबियों और गूनागूँ ज़ाहिरी और मअनवी महासिन का जामेअ बन गया है। बतौरे खास इस तर्जमए कुरआन के चंद नुमायाँ पेहलू हस्बे ज़ैल हैं।

- ये तर्जमए कुरआन सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और सलफे सालेह के तफसीरी नुकात पर मुशतमिल है।
- तर्जमए कुरआन में आयात के फिक़्ही पेहलू बखूबी उजागर हो गए हैं।
- हर आयत का तर्जमा पिछली और बाद वाली आयत से मरबूत होने के साथ साथ अपनी जगह पर मुस्तक़िल है।
- तर्जमा सलीस, रवां और आम फहम है।

➲ इस तर्जमे की मदद से कुरआने करीम के मज़ामीन को समझना और ज़हननशीन करना आसान हो गया है।

जहाँ तक नज़रे सानी का तअल्लुक़ है, तो ये महज़ तौफीक़े रब्बानी और बजुर्गों के फ़ुयूज़ व बरकात हैं के अहक़र अपनी इल्मी बेबिज़ाअती के बावजूद इस खिदमत की अन्जाम दही के क़ाबिल हुवा है। अहक़र ने ये तर्जमा दो मर्तबा बिल इस्तीआब हरफन हरफन पढ़ा है और दीगर उर्दू तराजिम से मुवाज़ना किया है। और बतौरे खास सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम के आसान तर्जमए कुरआन को पेशे नज़र रखा है। अल्लाह तआला का इस आजिज़ पर इहसाने अज़ीम और लुत्फे अमीम है के तर्जमए कुरआन पर नज़रे सानी का तमाम काम इसी नहज पर मुकम्मल हुवा। फलिल्लाहिल हम्द वश्शुक्र।

दस्त बदुआ हूँ के अल्लाह तआला इस कोशिश व काविश को शरफे क़बूल से सरफराज़ फरमाए और इस खिदमत को ज़खीरए आखिरत बनाए और इस के ज़रीए मुसलमानों में कुरआन के समझने और उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगियों को संवारने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा फरमाए। आमीन! वमा ज़ालिक अलल्लाहि बिअज़ीज़!

(हज़रत मौलाना डा०) साजिदुर्रहमान सिद्दीक़ी (रहमतुल्लाहि अलैहि)

1 मुहर्रमुल हराम 1432 हि०

5

मेरा अक़ीदा है के...

★ क़ुरआन कलामे इलाही है। मख्लूक़ नहीं, बल्के कलामुल्लाह, अल्लाह की सिफत है।

★ क़ुरआन अल्लाह की आखिरी किताब है। इस के बाद कोई किताब अल्लाह ने नाज़िल नहीं फ़रमाई और न नाज़िल होगी।

★ क़ुरआन ख़ातमुल अम्बिया, खत्मुल मुरसलीन, आखिरी पैग़मबर, नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म पर अल्लाह ने नाज़िल फरमाया जो साबिक़ा तमाम अम्बिया की शराइअ के लिए नासिख़ है। क़ुरआनी अहकाम और शरीअते मुहम्मदी पर ही क़ियामत तक इन्सानीयत को चलना है।

★ क़ुरआन के बाद अब न कोई किताब उतरेगी, न मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के बाद कोई नबी अल्लाह भेजेगा। झूठे मुद्दइए नुबुव्वत की अल्लाह के पैग़मबर ने खबर दी है, वो दज्जाल पैदा होते रहेंगे।

★ क़ुरआने करीम अल्लाह की ऐसी किताब है जो अपने नुज़ूल में मुनफ़रिद हैसियत रखती है, के ये दीगर अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तरह किताबी शक्ल में नहीं दी गई। जिब्रईले अमीन और दीगर मलाइका को हज़ारों दफा दरे रिसालत पर बारयाबी का शर्फ़ हासिल हुवा। इस तरह ये किताब उम्मत को पहोंची।

★ ये ऐसी किताब है जो मोअज़िज़ है, के अल्लाह ने तमाम सुन्ने वालों, पढ़ने वालों को उस जैसी एक आयत बनाने का चैलेंज दे रखा है ।

★ बशरीय्यत के आलम के अलावा कुर्एए अर्ज़ी पर बेशुमार दूसरे आलमों का उस में ज़िक्र है। उन सब के निज़ाम पर मलाइका मुक़र्रर हैं।

★ क़ुरआने करीम सिर्फ बशरी क़ूव्वत, अरबीदानी और अक़्ल के ज़रिए नहीं समझा जा सकता, बल्के नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की बतलाई हुई तफ़्सीरे क़ुरआन, जो सहाबाए किराम के ज़रिए उम्मत को पहोंची, वही मोअतबर है।

★ मौजूदा क़ुरआन मुकम्मल है, जो एक सो चौदा (११४) सूरतों और तीस (३०) पारों का मजमूआ, मसाहिफ़ में और उम्मत के हुफ्फ़ाज़ के सीनों में है। उसी को बग़ैर किसी कमी बेशी के

सहाबाए किराम ने उम्मत को पहोंचाया है।

★ क़ुरआन ख़ल्क़त और उलूहीय्यत के मा बय्न की हुदूद इन्सान को बताता है। खुदा ही तमाम मख़लूक़ात का ख़ालिक़ व मालिक है। नफा व ज़रर उसी की क़ुदरत में है। रिज़्क़ की तंगी व वुसअत उसी की तरफ से है। शिफ़ा व सिहहत वही देता है। वही अल्लामुल ग़ुयूब है। अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर तमाम इन्सानों को हर चीज़ का इल्म उसी ने दिया। हज़रत आदम अलैहि वअला नबीय्यिना अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर ख़ातमुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म तक तमाम अम्बिया खुदा की मख्लूक़ व बशर थे। अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम, मुअजिज़ाते अम्बिया और उन की उम्मतों के अहवाल की खबर क़ुरआन हमें देता है। मसअलए तक़दीर को अल्लाह ने जगह जगह बयान फरमाया।

★ सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने सहाबाए किराम को क़ुरआने करीम की बहोत सी पेशिन्गोइयाँ मुख्तलिफ आयात में सुनाईं। बहोत सारी पूरी हुईं, और जो बाक़ी हैं, क़ियामत से पेहले पूरी होंगी। और भी जो बाक़ी रहेंगी, वो आलमे बरज़ख, हश्र व नश्र और जन्नत व जहन्नम में पूरी होंगी। कुछ पेशिन्गोइयाँ क़ुर्बे क़ियामत की अलामात के तौर पर उस में बयान की गई हैं, जैसे याजूज माजूज का निकलना, दाब्बतुल अर्ज़ और नुज़ूले ईसा अलैहि व अला नबीय्यिना अस्सलातु वस्सलाम।

★ आलमे बरज़ख, हश्र व नश्र और नफखे सूर के अहवाल सब से ज़्यादा तफ्सील से क़ुरआन में बयान किए गए। हश्र में मख्लूक़ की खुदा के सामने पेशी और हिसाब व किताब और आमाल की जज़ा व सज़ा का ज़िक्र क़ुरआने करीम में जगह जगह है।

★ शरीअते मुहम्मदी के अहकाम, पंजवक़्ता और जुमुआ की नमाज़ें और तहारत, ग़ुस्ल, वुज़ू और तयम्मुम का बयान है। सदक़ा, ज़कात, रोज़ा, ऐतेकाफ, लैलतुल क़दर, हज और उस के अक़्साम, उमरा और हज के मसाइल क़ुरआन हमें सिखाता है। निकाह, तलाक़, तलाक़ की अक़्साम, महर, मुतआ, रिज़ाअत, खुल्अ, ज़िहार, इद्दत और नफ़क़ा वग़ैरा को बयान किया गया।

★ ज़िना और तोहमते ज़िना की सज़ा और चोरी डकैती की सज़ाएं बयान की गई हैं। ज़िना वग़ैरा से तहफ़्फ़ुज़ के लिए पर्दे के अहकाम, किसी के घर में दाखले के लिए इजाज़त ले कर दाखिल होने के आदाब बयान किए गए और रास्ते में निगाहों की हिफाज़त वग़ैरा आदाबे

मुआशरत बयान किए गए।

★ खरीद व फरोख्त और लैन दैन के तरीक़े और गवाहों की गवाही वग़ैरा भी बयान किए गए हैं। खरीद व फरोख्त में सूदी लैन दैन से न बचने पर वईदें बयान की गई हैं।

★ दो दर्जन से ज़ाइद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात में से सब से मुहतम्म बिश्शान वो हैं जिन को खुसूसियत के साथ क़ुरआन ने बयान किया। बदरे कुबरा, बदरे सुग़रा, उहुद, अहज़ाब, बनू क़ुरैज़ा, सुल्हे हुदैबिया, फत्हे मक्का, ग़ज़वए हुनैन और ग़ज़वए तबूक के सिलसिले में मुस्तक़िल आयात नाज़िल हुई हैं। इन ग़ज़वात के शुरका को सहाबाए किराम में एक मुमताज़ नुमायां हैसियत दी गई।

★ उम्मते मुहम्मदीया में, बल्के अम्बिया अलैहुमस्सलातु वस्सलाम को छोड़ कर तमाम अम्बिया की उम्मतों में सब से अफज़ल तरीन सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अबू बक्र अस्सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उमर इब्नुल खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उस्मान इब्ने अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु अलत्तरतीब सब से अफज़ल क़रार पाए। ख़ुलफ़ाए अरबआ के दीगर कारनामों के साथ अज़ीम कारनामा क़ुरआने करीम की तजमीअ, तहफ़्फ़ुज़ और उसे उम्मत तक पहोंचाना है। रदियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम।

यूसुफ मोतारा
दारुल उलूम होलकम्ब, बरी
१७ जुमादा अलउखरा १४३५
मुताबिक़ १७ अपरैल २०१४